Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 1

भारत का इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	संकल्पना एवं विचार- प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा	1
2	प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	26
3	पाषाण युग	31
4	ताम्र-पाषाणिक काल(3000-500BC)	35
5	सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	39
6	वैदिक काल	46
7	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	53
8	महाजनपद काल (600-300 BC)	71
9	मौर्य साम्राज्य	77
10	मौर्योत्तर काल	86
11	संगम युग	93
12	गुप्त युग	98
13	दक्कन के वाकाटक	104
14	गुप्तोत्तर काल	105
15	पूर्व मध्यकालीन भारत (750-1200 AD)	113
16	चोल साम्राज्य (850-1200 ईस्वी)	125
17	संघर्ष की युग (1000-1200 AD)	133
18	अरब आक्रमण	139
19	दिल्ली संतलत	144
20	भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	154
21	मुगल साम्राज्य का पतन	161
22	नए राज्यों का उदय	165
23	भारत में ब्रिटिश सत्ता	167

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	1857 तक प्रशासनिक	183
25	1857 का विद्रोह	187
26	1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन	193
27	सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन	196
28	ब्रिटिश शासन के तहत अर्थव्यवस्था	208
29	शिक्षा और प्रेस का विकास	217
30	ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोकप्रिय आंदोलन	224
31	राष्ट्रवाद का जन्म (उदारवादी चरण 1885-1905)	235
32	उग्रवादी राष्ट्रवाद का युग चरमपंथी चरण (1905-1909)	240
33	जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917-1925)	251
34	स्वराज के लिए संघर्ष (1925-1939)	259
35	स्वतंत्रता की ओर (1940-1947)	274
36	स्वतंत्रता की पूर्व संध्या पर भारत	285

1 CHAPTER संकल्पना एवं विचार- प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा

संकल्पना एवं विचार- प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा

- प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा की शुरुआत ऐतिहासिक काल (**वैदिक काल से 1500 ई.पू.**) से मानी जाती है क्यों की इसी काल से ऐतिहासिक लिखित साक्ष्य प्राप्त होते हैं।
- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का सीधा सम्बन्ध वैदिक काल के इतिहास से है।
- **वैदिक काल को दो भागो में बांटा गया है-**
  1. पूर्व वैदिक काल /ऋग्वैदिक काल(1500-1000 ई.पू.)
  2. उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.)
- **वैदिक कालीन ज्ञान परम्परा के स्त्रोत -**
  1. वेद
  2. उपनिषद
  3. आरण्यक
  4. ब्राह्मण ग्रन्थ
  5. वेदांग
  6. पुराण
  7. महाकाव्य - महाभारत और रामायण आदि

भारतवर्ष

- **शाब्दिक अर्थ** - भरत का देश
- भारतवर्ष नाम का उल्लेख हिंदू महाकाव्यों तथा पुराणों किया गया है
- **क्षेत्र विस्तार**-
  - हिन्दूकुश पर्वत (अफगानिस्तान) से इंडोनेशिया और तिब्बत से श्रीलंका तक
  - **पुराणों एवं महाकाव्यों के अनुसार** त्रिविष्टप (तिब्बत) की उत्तरी सीमा से लेकर समुद्र तक सारा क्षेत्र जिसमें उपगणस्थान (अफगानिस्तान), तिब्बत, नेपाल, सिक्किम, भूटान, मलेशिया, सिंगापुर तथा श्रीलंका इत्यादि सभी क्षेत्र सम्मिलित हैं।
  - विष्णु पुराण के अनुसार समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो विशाल क्षेत्र स्थित है, उसका नाम भारत है और उसकी संतान को भारती कहते हैं।
  - महाकवि कालिदास ने भी देवतात्मा हिमालय का वर्णन किया है।
  - आचार्य चाणक्य ने अपने ग्रंथ 'कौटिल्य अर्थशास्त्र' में चक्रवर्ती क्षेत्र भारत की व्याख्या की है।
  - सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारत की सीमाओं में अफगानिस्तान और मध्य एशिया के तांशकंद – समरकंद को भी सम्मिलित किया है।

- **निवासी-** भारती अर्थात भरत की संतान
- भरत एक वैदिक कालीन प्राचीन कबीला था जिसका उल्लेख ऋग्वेद के सातवें मंडल में किया गया है।
- भरत कबीले को **'दसराज युद्ध'** में विजय प्राप्त हुई; जो भरत कबीले के मुखिया सुदास (तृत्सु राजवंश) और दस राजाओं के संघ के बीच परुष्णी नदी (रावी) के तट पर लड़ा गया था।
- दस राजाओं के संघ में, **पंचजन**- अनु, दुह्य, पुरु, यदु, तुर्वस और **पांच लघु जनजातियाँ** - अलिन, पक्थ, भलान, शिव तथा विषाणिन; शामिल थे
- सुदास के पुरोहित ऋषि वशिष्ठ थे।

वेद

- वेद सर्वप्राचीन ग्रंथ हैं।
- इन्हे अपौरुषेय (अर्थात देवताओं या मानव द्वारा रचित नहीं) माना गया है ।
- वेदों को नित्य कहा गया है जिसका अर्थ है वेद हमेशा से मौजूद थे ।
- **संकलनकर्ता** - महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास
- **वेदों संख्या**- 4
  - ऋग्वेद
  - यजुर्वेद
  - सामवेद
  - अथर्ववेद
- ऋग्वेद,यजुर्वेद और सामवेद को **वेदत्रयी** में शामिल किया गया है।
- वेदों को संयुक्त रूप से **संहिता** कहा जाता है।

ऋग्वेद

- **विवरण**- इसमें आर्यों के इतिहास, राजनीति और धार्मिक विशेषताओं का उल्लेख मिलता है
- यह वेदों में सर्व प्राचीन वेद है
- **शाब्दिक अर्थ** - रिचाओ के क्रमबद्ध ज्ञान का संग्रह
- **पाठकर्ता**-होतृ
- **संग्रह**- 10 **मंडल**,1028 **सूक्त**,10462 **ऋचाएं;** इसमें संग्रहित हैं

ऋग्वेद के 10 मंडल

मंडल	संकलनकर्ता
प्रथम	मधुच्छन्द, दीर्घतमा
द्वितीय	गृत्समद
तृतीय	विश्वामित्र
चतुर्थ	वामदेव
पंचम	अत्रि
षष्ठ	भारद्वाज
सप्तम	वशिष्ठ
अष्टम	कण्व एवं अंगिरस
नवम	आंगिरस, कश्यप
दशम	त्रित, इंद्राणी, शची श्रद्धा

- दस मंडलों में **दो से सात तक के मंडल सर्वप्राचीन** माने जाते हैं
- तृतीय मंडल में **गायत्री मंत्र** का उल्लेख जो सूर्य देवता (सवित्र देव) को समर्पित है जो ऋषि विश्वामित्र द्वारा रचित है
- आठवें मंडल की ऋचाओं को **'खिल'** कहा जाता है
- नवम मंडल **सोम** को समर्पित है जिससे संबंधित 114 मंत्र उल्लेखित हैं
- दशम मंडल के **पुरुषसुक्त** में कर्म आधारित चार वर्णों का उल्लेख है ;जैसे- ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र
- ऋग्वेद के **ब्राह्मण ग्रंथ**- **ऐतरेय और कौशीतकी**
- ऐतरेय में **शुनःशेप आख्यान** का वर्णन मिलता है
- **शाखाएं-** महर्षि पतंजलि के अनुसार ऋग्वेद की 21 शाखाएं है जिसमे केवल **शाकल शाखा** ही जीवित है

यजुर्वेद

- **विवरण**- श्रोत एवम कर्मकांड आधारित वेद जो की **गद्य और पद्य** दोनो में संकलित है
- **पाठकर्ता-** अध्वर्यु
- **यजुर्वेद का वर्गीकरण** - शुक्ल और कृष्ण यजुर्वेद
- **शुक्ल यजुर्वेद**
  - यह केवल पद्य में संकलित
  - **शाखा**- काण्व और माध्यन्दिन
  - इसकी संहिताओं को **'वाजसनेय'** कहा जाता है।
- **कृष्ण यजुर्वेद**
  - गद्य पद्य दोनों में संकलित
  - **शाखा**- तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणि, कपिष्ठल
- **ब्रह्मण ग्रंथ**- शतपथ (पुनर्जन्म का सिद्धांत, पुरुरवा-उर्वशी आख्यान, जलप्लावन कथा आदि)
- यजुर्वेद का **अंतिम भाग इशोपनिषद** कहलाता है।
- यजुर्वेद से सम्बंधित **कठोपनिषद** में **यम एवं नचिकेता संवाद** वर्णित है

सामवेद

- इस वेद को भारतीय संगीत का जनक कहा जाता है
- **विवरण**- यज्ञों के समय गाये जाने वाले मंत्रों कर संग्रह
- **पाठकर्ता**- उद्गाता
- **ब्राह्मण ग्रन्थ-** पंचविश
- **शाखाएं**- कौथुमीय राणायनीय जैमिनीय
- अधिकांश हिस्सा ऋग्वेद से संबंधित केवल 99 मंत्र ही मौलिक हैं

अथर्ववेद

- **विवरण-** सामान्य मनुष्यो "के विचारों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है। यह सबसे बाद का ग्रंथ माना गया है अतः वेदत्रयी में शामिल नहीं है
- **पाठकर्ता** ब्रह्मा
- **ब्राह्मण ग्रंथ** - गोपथ
- **शाखायें** - शौनक, पिप्पलाद

- इसमें मगध एवं अंग दूरस्थ प्रदेश के रूप में वर्णित किया गया है
- अथर्ववेद में प्रशासनिक इकाई यथा- सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।
- अर्थर्ववेद में परीक्षित को कुरुओं का राजा कहा गया है तथा कुरु देश की समृद्धि का अच्छा चित्रण मिलता है।

उपनिषद

- उपनिषद ; उप व नि उपसर्ग पूर्वक सद धातु में क्विप् प्रत्यय लगने से निर्मित शब्द है
- **उप** का अर्थ निकट, **नि** का अर्थ निष्ठापूर्वक,**सद** का अर्थ बैठना
- **शाब्दिक अर्थ**-तत्व ज्ञान के लिए गुरु के समीप सविनय बैठना
- अत्यंत गुप्त और गूढ होने से जो विद्या योग्य अन्तेवासी शिष्य द्वारा गुरु के अत्यंत निकट नीचे बैठकर प्राप्त की जाती है वह उपनिषद है
- वेदों का रहस्यमय ज्ञान उपनिषदों में होने की वजह से उन्हें '**गुह्य**' कहा गया है।
- **विवरण**-उपनिषदों में ऋषियों के दार्शनिक चिंतन (Philosophical thoughts) की प्रधानता अभिव्यक्त हुई है।
- वैदिक वाङमय में उपनिषद अंतिम स्थान पर आते हैं। अतः उपनिषदों को **वेदांत** भी कहा जाता है
- भारतीय परंपरा में उपनिषदों की संख्या 108 है।
- मुक्तिकोपनिषद में कहा गया कि 108 उपनिषदों के अध्ययन से मुक्ति प्राप्त होती है।

वेद अनुसार उपनिषदों का वर्गीकरण

वेद	वेद की शाखायें	सम्बंधित उपनिषद	उपनिषदों की संख्या
ऋग्वेद	शाकल वाष्कल	ऐतरेय ईश, वृहदारण्यक, कौषीतकि,वाष्कल	10
यजुर्वेद			51
1.शुक्ल यजुर्वेद	काण्व माध्यन्दिन	ईशावास्योपनिषद्,बृहदारण्यकोपनिषद् ईशावास्योपनिषद्,बृहदारण्यकोपनिषद्, पैप्पलाद प्रश्नोपनिषद्	19
2.कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय मैत्रायणी कठ श्वेताश्वतर	तैत्तिरीय उपनिषद मैत्रायणी उपनिषद कठ उपनिषद श्वेताश्वतर उपनिषद	32
सामवेद	कौथुम जैमिनीय	छान्दोग्य उपनिषद केन उपनिषद	16
अथर्ववेद	शौनक	मुण्डकोपनिषद्,माण्डूक्योपनिषद्	31

उपनिषदों की विशेषता-

- ब्रह्म और आत्मा की एकता
- ब्रह्मप्राप्ति का साधन 'ज्ञान'
- ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति
- ज्ञान से कर्मकाण्ड की हीनता
- असंसार की निःसारता
- अवेदों की प्रामाणिकता
- अविरोधी तत्त्वों की सहप्रस्तुति
- उत्कृष्ट नैतिक जीवन की प्रशंसा

उपनिषदों का का महत्व

उपनिषदों के गौरव और महत्त्व के सम्बन्ध में,भारत के द्वितीय राष्ट्रपति **डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन्** ने लिखा है, 'उपनिषदों का इतना आदर इस कारण नहीं है कि वे श्रुति और प्रकट हुए साहित्य का एक भाग होने से एक विशिष्ट स्थान रखती हैं, अपितु इसका कारण यह है कि ये अपनी अक्षय अर्थवत्ता और आत्मिक शक्ति से भारतवासियों की पीढ़ी दर पीढ़ी को अन्तर्दृष्टि और बल प्रदान कर प्रेरणा देती रही है'.

प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक शोपेनहावर के अनुसार "उपनिषद् मेरे जीवन में शान्ति के साधन रहे हैं और मृत्यु में भी शान्ति के साधन रहेंगे".

इस प्रकार उपनिषदों के महत्व निम्नलिखित रूप में है -

- उपनिषद् ग्रन्थ भारतीय तत्त्वज्ञान और धार्मिक सिद्धान्तों के मूलस्रोत हैं। जिनमे दार्शनिक चिन्तन की प्रधानता है।
- उद्देश्य मनुष्य की चेतना को उर्ध्वगामी करते हुए ब्रह्मस्वरूप की प्राप्ति कराना है।
- उपनिषदों से ही दर्शन और अध्यात्म की प्रधान धारा प्रवाहित होती है जिससे संस्कृति और धर्म प्रभावित होते हैं।
- उपनिषदों को वेदों का ज्ञानकाण्ड माना जाता है, जबकि दूसरे ब्राह्मण आदि वैदिक ग्रन्थ वेद के कर्मकाण्ड का प्रतिपादन करते हैं ।
- उपनिषदों में वेदों का सर्वोत्तम सारतत्त्व निहित हैं।
- दर्शन शास्त्र की सभी मूलभूत समस्याओं पर गहन विचार विमर्श की उपलब्धता
- भारतीय अध्यात्म चिन्तन के मूलस्रोत हैं। इसीलिए इनको प्रस्थानत्रयी (ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्, गीता) में स्थान दिया गया है।

- प्रस्थानत्रयी के दूसरे दो ग्रन्थ ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भगवद्गीता कुछ सीमा तक उपनिषदों पर ही आधारित हैं।
- उपनिषद् मुख्य रूप से वेदान्त दर्शन के मूलाधार हैं।

आरण्यक

- **मुख्य विषय**- यज्ञीय अनुष्ठान के साथ उसके अन्तर्गत दार्शनिक विचार भी शामिल।
- अरण्यक ग्रन्थों का चिंतन स्थान जंगल का एकान्त शान्त वातावरण था।
- संहिता मंत्रो में जिस विद्या का संकेत मात्र ही उपलब्ध होता है, आरण्यक में उसका विश्लेषण है।
- श्रुति अनुसार मन्त्र, ब्राह्मण दो वेद के भाग है। इसमें ब्राह्मण के भी तीन भाग है। जिसमे आरण्यक एक मुख्य भाग के रूप में है ।
- आरण्यक ब्राह्मणों के परिशिष्ट ग्रन्थ के समान होते हैं।
- सायणाचार्य के मत में इस ग्रन्थ का अरण्य में पाठ होने से 'आरण्यक' नामकरण ही सार्थक है। जैसे-
  'अरण्याध्ययनादेतद् आरण्यकमितीर्यते ।
  अरण्ये तदधीयीतेत्येवं वाक्यं प्रवक्ष्यते ॥
- आरण्यक का मुख्य प्रतिपाद्य विषय केवल यज्ञ ही नहीं, अपितु यज्ञ, याग आदि के अन्दर विद्यमान आध्यात्मिक तथ्य की विवेचना है।
- आरण्यकों के महत्व को दर्शाते हुए महाभारत का कथन है कि औषधियों से जैसे अमृत को धारण किया वैसे ही वेदों से सार को लेकर के आरण्यकों की रचना की गयी
- कुछ विशिष्ट आरण्यक इस प्रकार हैं जैसे-
  - ऐतरेय आरण्यक,
  - बृहदारण्यक,
  - शांख्यायन आरण्यक और
  - तैत्तिरीय आरण्यक

ऐतरेय आरण्यक

- ऋग्वेद के दो आरण्यकों के मध्य में यह श्रेष्ठ आरण्यक है।
- यह आरण्यक ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। जिसमें पांच आरण्यक है।
- ये आरण्यक भिन्न ग्रन्थ रूप से माने जाते हैं।

a. प्रथम आरण्यक
  - **रचयिता**- ऐतरेय
  - इसमें महाव्रत का वर्णन है।
  - यह महाव्रत ऐतरेय ब्राह्मण के तीसरे प्रपाठक के गवामयन का ही एक अंश है।

b. द्वितीय आरण्यक
  - **रचयिता**- ऐतरेय
  - इसके पहले तीन अध्यायों में उक्थ, निष्कैवल्य शस्त्र, प्राणविद्या, पुरुष आदि की विवेचना है।

c. तृतीय आरण्यक
  - **रचयिता**- ऐतरेय
  - अन्य नाम है संहितोपनिषद् |
  - इस उपनिषद् में संहिता, पदक्रम, पाठों का वर्णन तथा स्वर व्यञ्जन आदि स्वरूप का भी विवेचन है।

d. चतुर्थ आरण्यक
  - **रचयिता**-आश्वलायन
  - यह बहुत ही छोटा है।
  - इस आरण्यक में महाव्रत के पांचवे दिन में प्रयुक्त होने वाली महानाम्न ऋचा है।

e. पंचम आरण्यक
  - **रचयिता**-शौनक
  - इसमें निष्कैवल्य शस्त्र का वर्णन है।

शांख्यायन आरण्यक

- यह ऋग्वेद का दूसरा आरण्यक है।
- इसमें पन्द्रह आध्याय है।
- इस आरण्यक के दृष्टा ऋषि का नाम गुणाख्य शाङ्ख्यायन था। उनके गुरु का नाम कहौल कौषीतकि था।
- ये दोनों अन्तिम आचार्य है। इस कारण से इस शाङ्ख्यायन आरण्यक के अन्तर्गत उपनिषद् कौषीतकि नाम से विख्यात है।
- पहले दूसरे अध्याय में महाव्रत का वर्णन उपलब्ध है।
- तीसरे अध्याय से छठे अध्याय तक कौषीतकि, उपनिषद् कहलाता है,
- सातवां, आठवा अध्याय संहितोपनिषद् कहलाता है।
- नौवें अध्याय में प्राण की श्रेष्ठता का वर्णन है।
- दसवें अध्याय के अन्तर अग्निहोत्र का अङ्ग सहित और उपाङ्ग इत्यादि का वर्णन है ।
- ग्यारहवें अध्याय में मृत्यु को भगाने के लिए एक विशिष्ट याग का विस्तृत विवरण दिया गया है।
- बारहवें अध्याय में बिल्व फल से मणि निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन है,
- तेरहवें और चौदहवें अध्यायों में अत्यंत संक्षेप में आत्मा का ब्रह्म के साथ एकत्व प्राप्ति जीव की सबसे बड़ी उपलब्धि के विषय में बताया गया है
- पंद्रहवे अध्याय में आचार्य का वंश वर्णन है।

बृहदारण्यक

- यह प्राचीनतम और मान्य आरण्यक यजुर्वेद से सम्बन्धित है
- इसमें आत्मतत्त्व की विशेष विवेचना को उपनिषद कहा जाता है।
- कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा का भी एक आरण्यक है, जो मैत्रायणीय उपनिषद नाम से प्रसिद्ध है।

तैत्तिरीय आरण्यक

- इस आरण्यक में दस परिच्छेद अथवा प्रपाठक हैं।
- यह प्रपाठक सामान्य रूप से **'अरण'** पद से जानी जाती है।
- इसका नामकरण भी उससे ही होता है। जिसमें उनके संक्रियाओं का भी वर्णन मिलता है जैसे-

- पहले प्रपाठक का नाम है **'भद्र'**, इस प्रपाठक आरुण-केतु नाम की अग्नि की उपासना का तथा उसके लिए ईटों के चयन का वर्णन मिलता है।
- दूसरे का **'सहैव'**, इस प्रपाठक में स्वाध्याय का तथा पञ्चमहायज्ञों का वर्णन है। यहाँ गङ्गा-यमुना के बीच का स्थान पवित्र, तथा मुनियों के निवास के लिए उत्कृष्ट भूमि का वर्णन है।
- तीसरे का **'चिति'**, इस प्रपाठक में चार होताओं के चित्त में उपयोगी मंत्रो का संग्रह है।
- चौथे का **'युञ्जते'**, इस अध्याय में संन्यासी के उपयोगी मन्त्रों का सङ्ग्रह है।
- पांचवे का **देववै'** इस प्रपाठक में यज्ञों के सङ्केत नाम उपलब्ध हैं।
- छठे का **'परे'** इस प्रपाठक में पितृमेध सम्बन्धी मन्त्रों का उल्लेख है
- सातवे का **'शिक्षा'**,
- आठवे का **'ब्रह्मविद्या'**,
- नौवे का **'भृगु'**,
- सात, आठ और नौवें प्रपाठकों को मिलाकर **'तैत्तिरीय उपनिषद'** कहलाता है।
- दसवें का **'नारायणीय'** है। जो कि **महानारायणीय उपनिषद** कहलाता है।

ब्राह्मण ग्रन्थ

- चार वेदों, अर्थात् ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में से प्रत्येक के दो भाग हैं: **संहिता और ब्राह्मण**।
- प्रत्येक वेद से जुड़े एक या एक से अधिक ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।
- ब्राह्मण ग्रन्थ **वेदों के मंत्रों और भजनों से संबंधित** प्राचीन व्याख्यात्मक ग्रंथ हैं।
- ब्राह्मणों ग्रंथों को **900-700 ईसा पूर्व** के बीच व्याख्यायित किया गया था।
- 'ब्राह्मण' शब्द का सामान्य अर्थ 'पवित्र ज्ञान या सिद्धांत की व्याख्या' है।
- इसकी उत्पत्ति 'ब्राह्मण' शब्द से हुई है, इसका अर्थ है- ब्राह्मण पुजारी जिनके पास वेदों का ज्ञान और समझ है अर्थात सीखे गए अनुष्ठान की व्याख्या उनके द्वारा की जाती थी ।
- ब्राह्मण ग्रंथ में चार वेदों से जुड़ी **गद्य टिप्पणियाँ** शामिल हैं
- इनमें वेदों के मंत्रों और भजनों की व्याख्या, मिथकों द्वारा चित्रित किंवदंतियों की शिक्षाएं, अनुष्ठानों के प्रदर्शन के बारे में जानकारी, साथ ही कुछ दर्शन भी शामिल हैं।
- ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों के संहिता भाग की व्याख्या के रूप में कार्य करते हैं और मंत्रों और भजनों के गुप्त अर्थों को समझाते हैं।

ब्राह्मणों ग्रंथो की सामग्री का वर्गीकरण

इन्हें दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है:-

- **विधि**: इसमें विशेष अनुष्ठानों के प्रदर्शन से संबंधित निर्देश और चेतावनियाँ शामिल हैं।
- **अर्थवाद**: इसमें मंत्रों और विशेष अनुष्ठानों के संबंध में व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ शामिल हैं।
- इन दोनों में विधि को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है।

ब्राह्मण ग्रंथों का वर्गीकरण

प्रत्येक वेद संहिता के लिए, ब्राह्मणों के रूप में गद्य टिप्पणियाँ संलग्न हैं। वेदों से जुड़े प्रमुख व्याख्यात्मक ग्रंथ हैं:

वेद	ब्राह्मण ग्रन्थ
ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण।
शुक्ल यजुर्वेद	शतपथ ब्राह्मण ।
कृष्ण यजुर्वेद	तैत्तिरीय ब्राह्मण।
सामवेद	पञ्चविंश, षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, दैवताध्याय, उपनिषद् (मंत्र ब्राह्मण), संहितोपनिषद्, वंशब्राह्मण तथा जैमिनीय या तलवकार ब्राह्मण ।
अथर्ववेद	गोपथ ब्राह्मण।

ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ

- ऐतरेय ब्राह्मण और कौशीतकी ब्राह्मण ग्रन्थ ऋग्वेद से संबंधित हैं।
- इन ग्रंथों में 12 दिनों के अनुष्ठानों, सुबह और शाम को किए जाने वाले दैनिक बलिदानों का वर्णन है।
- **ऐतरेय ब्राह्मण**(600-400 ईसा पूर्व)- इसमें आठ पुस्तकें, पंचिकाएँ शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक में पाँच अध्याय हैं। यह ऋग्वेद की शाकल शाखा के ऋषि महिदास ऐतरेय और शाही उद्घाटन के समारोहों से संबंधित है।
- **कौशीतकी ब्राह्मण-** यह ऋग्वेद के वत्कल या बश्कला शाखा से सम्बंधित है और इसमें तीस अध्याय हैं जिनमें भोजन और पेय (सोम) बलिदान और देवताओं की कथा पर चर्चा की गई है।

सामवेद के ब्राह्मण ग्रन्थ

सामवेद के 10 ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, जिनमें से पंचविस, सदविस और जैमिनीय ब्राह्मण मुख्य हैं।

पंचविस ब्राह्मण- यह सबसे पुराने और सबसे महत्वपूर्ण ब्राह्मणों में से एक है जिसमें 25 प्रपाठक शामिल हैं। इसमें व्रात्यस्तोम और अन्य कई पुरानी किंवदंतियों के बारे में विवरण शामिल हैं।

सदविस ब्राह्मण- इसमें 5 अध्याय या अध्याय हैं। इस ब्राह्मण की पाठ्य सामग्री पंचविम्सा की पूरक है और इसमें चमत्कारों और संकेतों के बारे में अतिरिक्त जानकारी शामिल है।

जैमिनीय ब्राह्मण- इसमें यज्ञ अग्नि की दैनिक आहुति का वर्णन है। हालाँकि, इसका पूर्ण अनुवाद उपलब्ध नहीं है।

यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रन्थ

- शतपथ ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद से और तैत्तिरीय ब्राह्मण कृष्ण यजुर्वेद से जुड़ा है।
- इनमें ज्यामिति का ज्ञान और खगोलीय घटनाओं का विवरण होता है।

- इनमें सरस्वती नदी के सूखने का भी उल्लेख मिलता है।
- इसमें भगवान विष्णु के अवतारों की सूची और पौराणिक किंवदंतियों की उत्पत्ति के बारे में जानकारी भी शामिल है।

अथर्ववेद के ब्रह्मण ग्रन्थ

- गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रन्थ है।
- इसे दो भागों में विभाजित किया गया है: पूर्व-ब्राह्मण और उत्तर-ब्राह्मण।
- पूर्व के अध्याय अथर्वण और उसके पुजारी का महिमामंडन करते हैं।
- गोपथ का एक वर्ग यज्ञ की देखरेख करने वाले ब्राह्मण पुजारी के कार्यों पर जोर दे रहा है।

भारतीय षट्दर्शन

दर्शन की संकल्पना

- दर्शन शब्द 'दृश' धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है देखना अर्थात् किसी भी वस्तु के प्रति "दृष्टिकोण "
- भारतीय विचारधारा के अनुसार दर्शन अधिक व्यापक अवधारणा है। जिसमें दर्शन जीवन तथा जगत् में व्याप्त दुखों से मुक्ति दिलाने का अर्थात मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है।
- पाश्चात्य दर्शन के अँग्रेजी में Philosophy जो Philos + Sophia शब्द से बना हुआ है जिसका अर्थ है - ज्ञान के प्रति प्रेम/स्नेह

षड्दर्शन

- वेद ज्ञान को समझने व समझाने के लिए दो प्रयास हुए:-
  1.दर्शनशास्त्र
  2.ब्राह्मण और उपनिषदादि ग्रन्थ।
- **वेद ज्ञान को तर्क से समझाने के लिए** षड्दर्शन शास्त्र लिखे गये।
- ये षड्दर्शन मूल वेद ज्ञान को तर्क से सिद्ध करते है। और प्रत्येक दर्शन शास्त्र का अपना-अपना विषय है।
- ये दर्शन शास्त्र **सूत्र** रूप में लिखे गये है।
- प्रत्येक दर्शन अपने लिखने का उद्देश्य अपने प्रथम सूत्र में ही दर्शाते हैं तथा अन्त में अपने उद्देश्य की पूर्ति का सूत्र देता है।
- वैदिक ज्ञान की अद्वितीय पुस्तक भगवद्गीता के ज्ञान का आधार दर्शन शास्त्र ही है। जिसके कुछ उल्लेख इस प्रकार है-
- भगवद्गीता 2-39 और 13-4 में कहा है कि :-
  एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रुणु।
  बुद्धया युक्तो यथा पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।। (गीता 2-39)
  भावार्थ -हे अर्जुन! यह बुध्दि(ज्ञान) जो सांख्य के अनुसार मैंने तुझे कही है, अब यही बुध्दि मैं तुझे योग के अनुसार कहूंगा, जिसके ज्ञान से तू कर्म-बन्धन को नष्ट कर सकेगा।
  ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्।
  ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमदिभर्विनिधैश्चितैः।। (गीता13-4)
  भावार्थ-इस क्षेत्र (शरीर) और क्षेत्रज्ञ (आत्मतत्वों) के विषय में ऋषियों ने वेदों ने विविध भाँति से समझाया है। इन्ही के विषय में ब्रह्मसूत्रों में पृथक्-पृथक् (शरीर जीवात्मा और परमात्मा के विषय में) युक्तियुक्त ढंग से (तर्क से) कथन किया है।
- अतः कहा जा सकता है कि भारतीय षड्दर्शन उन भारतीय दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों के मंथन का परिपक्व परिणाम है जो हजारों वर्षो के चिन्तन से निर्धारित हुए है
- षड्दर्शन हिन्दू (वैदिक) दर्शन के नाम से प्रचलित है।
- इन्हें आस्तिक दर्शन भी कहा जाता है।

षड्दर्शन और उनके प्रणेता निम्नलिखित है-

दर्शन	**प्रतिपादक**
पूर्व मीमांसा	महर्षि जैमिनी
वेदान्त (उत्तर मीमांसा)	महर्षि बादरायण
सांख्य	महर्षि कपिल
वैशेषिक	महर्षि कणाद
न्याय	महर्षि गौतम
योग	महर्षि पतंजलि

पूर्व मीमांसा

- **प्रवर्तक**- महर्षि जैमिनी
- इस ग्रन्थ में **16 अध्याय,64 पाद और 2631 सूत्र** है।
- पाणिनि के अनुसार मीमांसा शब्द का अर्थ जिज्ञासा है अर्थात् जानने की लालसा।
- पूर्व-मीमांसा शब्द का अर्थ है जानने की प्रथम जिज्ञासा।
- मनुष्य जब इस संसार में अवतरित हुआ उसकी प्रथम जिज्ञासा यही रही थी कि वह क्या करे? इसलिए इस दर्शनशास्त्र का प्रथम सूत्र मनुष्य की इस इच्छा का प्रतीक है।
- ग्रन्थ का आरम्भ ही महर्षि जैमिनि इस प्रकार करते है-
  अधातो धर्मजिज्ञासा।। अर्थात अब धर्म करणीय कर्म के जानने की जिज्ञासा है।
- धर्म की व्याख्या यजुर्वेद में की गयी है। वेद के प्रारम्भ में ही यज्ञ की महिमा का वर्णन है।
- वैदिक परिपाटी में यज्ञ का अर्थ देव-यज्ञ ही नहीं है, वरन् इसमें मनुष्य के प्रत्येक प्रकार के कार्यों का समावेश हो जाता है।
- इस जिज्ञासा का उत्तर देने के लिए यह पूर्ण 16 अध्याय और 64 पादोंवाला वाला ग्रन्थ रचा गया है।
- इसमें कर्म को एक विस्तृत अर्थ वाला शब्द निर्धारित किया गया है। सभी प्रकार के कर्मों की व्याख्या इस दर्शन शास्त्र में है। जिसे हम उदाहरण के रूप में समझ सकते हैं
- **जैसे** - बढ़ई जब वृक्ष की लकड़ी से कुर्सी अथवा मेज बनाता है तो वह यज्ञ/कर्म ही करता है। वृक्ष का तना जो मूल रूप में ईधन के अतिरिक्त, किसी भी उपयोगी काम का नहीं होता, उसे बढ़ई ने उपकारी रूप देकर मानव का कल्याण किया है। अत: बढ़ई का कार्य यज्ञरूप ही है।

- **अन्य उदाहरण के अनुसार** - कच्चे लौह को लेकर योग्य वैज्ञानिक और कुशल शिल्पी एक सुन्दर कपड़ा सीने की मशीन बना देते हैं। इस कार्य से मानव का कल्याण हुआ। इस कारण यह भी यज्ञरूप है।
- इसके अंतर्गत ज्ञान उपलब्धि के जिन छह साधनों की चर्चा इसमें की गई है, जैसे -**प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि।**
- मीमांसा सिद्धान्त में वक्तव्य के दो विभाग है-
  - पहला है **अपरिहार्य विधि**; जिसमें उत्पत्ति, विनियोग, प्रयोग और अधिकार विधियां शामिल है।
  - दूसरा विभाग है **अर्थवाद**; जिसमें स्तुति और व्याख्या की प्रधानता है।
- मीमांसा दर्शन के अनुसार **वेद अपौरूषेय, नित्य एवं सर्वोपरि** है और वेद-प्रतिपादित अर्थ को ही धर्म कहा गया है।

वेदान्त (उत्तर मीमांसा)

- **प्रवर्तक-** महर्षि बादरायण
- इस दर्शन में **4 अध्याय**, प्रत्येक अध्याय में चार-चार पाद (कुल **16 पाद**) और **सूत्रों की संख्या 555** है।
- पहली जिज्ञासा कर्म धर्म की जिज्ञासा थी और दूसरी जिज्ञासा जगत् का मूल कारण जानने ज्ञान की थी।
- इस दूसरी जिज्ञासा का उत्तर ही वेदान्त अर्थात् उत्तर मीमांसा है।
- चूँकि यह दर्शन वेद के परम और अन्तिम तात्पर्य का अनुभव कराता है, इसलिए ही इसे वेदान्त दर्शन के नाम से भी जाना जाता हैं

  वेदस्य अन्त: अन्तिमो भाग ति वेदान्त:।। यह वेद के अन्तिम ध्येय ओर कार्य क्षेत्र की शिक्षा प्रदान करता है।
- जब मनुष्य जीवन-यापन करने में लगता है तो उसके मन में दूसरी जिज्ञासा जो उठती है, वह है- ब्रह्म -जिज्ञासा अर्थात् मूल पदार्थ को जानने की जिज्ञासा।
- इस सन्दर्भ में उत्तर मीमांसा का प्रथम सूत्र ही है-

  अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।। अर्थात-ब्रह्म के जानने की लालसा।
- इस जिज्ञासा का चित्रण श्वेताश्वर उपनिषद् में भी किया गया है। उपनिषद् कहता है कि-
- ब्रह्म का वर्णन करने वाले कहते है, इस (जगत्) का कारण क्या है? हम कहाँ से उत्पन्न है? कहाँ स्थित है? यह सुख-दु:ख क्यों होता है?
- इसमें बताया गया है कि **तीन ब्रह्म अर्थात् मूल पदार्थ** है- **प्रकृति,जीवात्मा और परमात्मा**।
- ये तीनों मूल पदार्थ अनादि है। इनका आदि-अन्त नहीं।
- ये तीनों ब्रह्म कहलाते है और जिसमें ये तीनो विद्यमान है अर्थात् जगत् ; वह परम ब्रह्म है।
- इसके अनुसार प्रकृति जो जगत् का उपादान कारण है, परमाणुरूप है जो **त्रिट** (तीन शक्तियों-**सत्व, राजस् और तमस्** का गुट) है।
- इसमें जीवात्मा का वर्णन करते हुए इसके जन्म-मरण के बन्धन में आने का वर्णन मिलता है। साथ ही मरण-जन्म से छुटकारा पाने का भी वर्णन है।
- इसके अंतर्गत परमात्मा जो अपने मूल रूप में तत्वों से संयुक्त होकर निर्धारित होता है, परन्तु उसका अपना शुद्ध रूप नेति-नेति शब्दों से ही व्यक्त होता है।

सांख्य दर्शन

- **प्रवर्तक-** महर्षि कपिल मुनि
- सांख्य दर्शन में **6** अध्याय और 451 सूत्र है।
- सांख्य सर्वाधिक पौराणिक दर्शन माना जाता है। जो सृष्टि रचना की व्याख्या एवं प्रकृति और पुरूष की पृथक-पृथक व्याख्या करता है।
- प्रकृति से लेकर स्थुल-भूत पर्यन्त सारे तत्वों की संख्या की गणना किये जाने से इसे सांख्य दर्शन कहते है।इसका अर्थ है की सांख्य संख्या द्योतक है।
- इस शास्त्र का नाम सांख्य दर्शन इसलिए पड़ा कि इसमें 25 तत्व या सत्य-सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।
- तत्कालीन भारतीय समाज पर इसका इतना व्यापक प्रभाव था कि महाभारत (श्रीमद्भगवद्गीता),विभिन्न पुराणों, उपनिषदों, चरक संहिता और मनु संहिता में सांख्य के विशिष्ट उल्लेख मिलते है।
- **सांख्य दर्शन की मान्यता** है कि संसार की हर वास्तविक वस्तु का उद्गम पुरूष और प्रकृति से हुआ है। पुरूष में स्वयं आत्मा का भाव है जबकि प्रकृति पदार्थ और सृजनात्मक शक्ति की जननी है।
- इसके अनुसार प्रकृति मात्र तीन गुणो के समन्वय की साम्यावस्था से बनी है। इस त्रिगुण सिद्धान्त के अनुसार सत्व, रजस्व तथा तमस की उत्पत्ति होती है।और ये तीनो परस्पर एक दूसरे को नि:शेष (neutralize) करते है
- प्रकृति की अविकसित अवस्था में यह गुण निष्क्रिय होते है पर परमात्मा/मूल तत्व के तेज से सृष्टि के उदय की प्रक्रिया प्रारम्भ होते ही प्रकृति के तीन गुणो के बीच का समेकित संतुलन टूट जाता है।
- सांख्य के अनुसार 24 मूल तत्व होते है जिसमें प्रकृति और पुरूष पच्चीसवां है।
- इसके अनुसार प्रकृति का स्वभाव अन्तर्वर्ती और पुरूष का अर्थ व्यक्ति-आत्मा है।
- व्यक्ति-आत्मा किसी न किसी रूप में प्रकृति से संबंधित हो जाती है और उनकी मुक्ति इसी में होती है कि प्रकृति से अपने विभेद का अनुभव करे।
- इस दर्शन के अनुसार जब आत्माओं और गुणों के बीच की भिन्नता का गहरा ज्ञान हो जाये तो इनसे मुक्ति मिलती है और मोक्ष संभव होता है।
- दर्शन के अनुसार परमात्मा का तेज परमाणु (त्रित) की साम्यावस्था को भंग करता है और असाम्यावस्था आरंभ होती है। रचना-कार्य में यह प्रथम परिवर्तन है।इस अवस्था को महत् कहते है।

- महत् प्रकृति का प्रथम परिणाम है। जो मन और बुध्दि से बनता हैं।
- इस दर्शन में तीन प्रकार के समूह देखे जाते है जो इस प्रकार हैं-
  - एक वे है जिनसे रजस् गुण शेष रह जाता है। यह तेजस अहंकार कहलाता है। इसे वर्तमान वैज्ञानिक भाषा में इलेक्ट्रान कहते है।
  - दूसरा परमाणु-समूह वह है जिसमें सत्व गुण प्रधान होता है वह वैकारिक अहंकार कहलाता है। इसे वर्तमान वैज्ञानिक प्रोटोन कहते है।
  - तीसरा परमाणु-समूह वह है जिसमें तमस् गुण प्रधान होता है इसे वर्तमान विज्ञान की भाषा में न्यूट्रॉन कहते है। यह भूतादि अहंकारहै।
- इन अहंकारों को वैदिक भाषा में **आप:** कहा जाता है। ये(अहंकार) प्रकृति का दूसरा परिणाम है।
- इन अहंकारों से पाँच महाभूत बनते है अर्थात् तीनों अहंकार जब एक समूह में आते है तो वे **परिमण्डल** कहला ते है। वर्तमान विज्ञान में इन्हें `ऐटम´ कहा गया है
- परिमण्डलों के समूह पाँच प्रकार के हैं। इनको महाभूत कहते हैं।
  1. पार्थिव
  2. जलीय
  3. वायवीय
  4. आग्नेय
  5. आकाशीय
- सांख्य का उद्देश्य तीनो प्रकार के दु:खों की निवृत्ति करना है।
- तीन दु:ख जो इस प्रकार हैं।
  - **आधिभैतिक**- यह मनुष्य को होने वाला शारीरिक दु:ख है जैसे-बीमारी, अपाहिज होना इत्यादि।
  - **आधिदैविक**- यह दैवीय प्रकोपों द्वारा होने वाले दु:ख है जैसे-बाढ़, आंधी, तूफान, भूकंप इत्यादि के प्रकोप ।
  - **आध्यात्मिक**- यह दु:ख सीधे मनुष्य की आत्मा को होता है जैसे-कि कोई मनुष्य शारीरिक व दैविक दु:खों के होने पर भी दुखी होता है। **उदाहरणार्थ**-कोई अपनी संतान अपना माता-पिता के बिछड़ने पर दु:खी होता है अथवा कोई अपने समाज की अवस्था को देखकर दु:खी होता है।

वैशेषिक दर्शन

- **प्रवर्तक**-महर्षि कणाद
- इस दर्शन में विशेष पदार्थ सूक्ष्मता से निरूपण किया गया है। इसलिए इसका नाम वैशेषिक दर्शन है।
- वैशेषिक दर्शन में परिमण्डल का वर्णन है। जिसमे पंच महाभूत तथा महाभूतों से बने चराचर जगत् के सब पदार्थ व्यक्त पदार्थ कहलाते हैं।
- चूंकि ये दर्शन परिमण्डल, पंच महाभूत और भूतों से बने सब पदार्थों का वर्णन करता है, इसलिए वैशेषिक दर्शन विज्ञान-मूलक है।
- वैशेषिक दर्शन के प्रथम दो सूत्र में कहा गया है कि जिससे इहलौकिक और पारलौकिक सुख की सिध्दि होती है वह धर्म है।
- कणाद के वैशेषिक दर्शन की गौतम के न्याय-दर्शन से भिन्नता इस बात में है कि इसमें 26 के बजाय 7 ही तत्वों का विवेचन है। जिसमें विशेष पर अधिक बल दिया गया है।
- वैशेषिक दर्शन बहुत कुछ न्याय दर्शन के समरूप है और इसका लक्ष्य जीवन में सांसारिक वासनाओं को त्याग कर सुख प्राप्त करना और ईश्वर के गंभीर ज्ञान-प्राप्ति के द्वारा अंतत: मोक्ष प्राप्त करना है।
- वैशेषिक दर्शन के अनुसार जगत में पदार्थों की संख्या केवल छह है। द्रव्य,गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समन्वय।
- वैशेषिक दर्शन में पदार्थों का निरूपण निम्नलिखित रूप से हुआ है जिनका वर्णन इस प्रकार है-
  - **जल**: यह शीतल स्पर्श वाला पदार्थ है।
  - **तेज**: उष्ण स्पर्श वाला गुण है।
  - **काल**: सारे कार्यों की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश में निमित्त होता है।
  - **आत्मा**: इसकी पहचान चैतन्य-ज्ञान है।
  - **मन**:यह मनुष्य के अभ्यन्तर में सुख-दु:ख आदि के ज्ञान का साधन है।
  - **पंचभूत**: पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश
  - **पंचइन्द्रिय**: घ्राण, रसना, नेत्र, त्वचा और श्रोत्र
  - **पंच-विषय**: गंध, रस, रूप, स्पर्श तथा शब्द
  - **बुध्दि**: ये ज्ञान है और केवलआत्मा का गुण है।नया ज्ञान अनुभव है और पिछला स्मरण।
  - **आदिगुण**: सारे गुण द्रव्यों में रहते हैं।
  - **अनुभव**: यथार्थ (प्रमा, विद्या) एवं अयथार्थ (अविद्या)
  - **स्मृति**: पूर्व के अनुभव के संस्कारों से उत्पन्न ज्ञान
  - **सुख**: इष्ट विषय की प्राप्ति जिसका स्वभाव अनुकूल होता है। अतीत के विषयों के स्मरण एवं भविष्यतमें उनके संकल्प से सुख होता है।सुख मनुष्य का परमोद्देश्य होता है।
  - **दु:ख** : इष्ट के जाने या अनिष्ट के आने से होता है जिसकी प्रकृति प्रतिकूल होती है।
  - **इच्छा**: किसी अप्राप्त वस्तु की प्रार्थना ही इच्छ है जो फल या उपायके हेतु होती है।
  - **धर्म,अधर्म या अदृष्ट:** वेद-विहित कर्म जो कर्ता के हित और मोक्का साधन होता है, धर्म कहलाता है। अधर्म से अहित और दु:ख होता है जो प्रतिषिद्ध कर्मो से उपजता है। अदृष्ट में धर्म और अधर्म दोनों सम्मिलित रहते हैं।

वैशेषिक दर्शन के मुख्य पदार्थ

1. **द्रव्य**: द्रव्य गिनती में 9 है जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश,काल,दिशा,आत्मा और मन है ।
2. **गुण**: गुणों की संख्या 24 मानी गयी है जिनमें कुछ सामान्य ओर बाकी विशेष कहलाते हैं। जिन गुणो से द्रव्यों में विखराव न हो उन्हें सामान्य (संख्या, वेग, आदि) और जिनसे बिखराव (रूप,बुध्दि, धर्म आदि) उन्हें विशेष गुण कहते है।

3. **कर्म**: किसी प्रयोजन को सिद्ध करने में कर्म की आवश्यकता होती है, इसलिए द्रव्य और गुण के साथ कर्म को भी मुख्य पदार्थ कहते हैं। चेलना,फेंकना, हिलना आदि सभी कर्म। मनुष्य के कर्म पुण्य-पाप रूप होते हैं।
4. **सामान्य**: मनुष्यों में मनुष्यत्व, वृक्षों में वृक्षत्व जाति सामान्य है और ये बहुतों में होती है। दिशा, काल आदि में जाति नहीं होती क्योंकि ये अपने आप में अकेली है।
5. **विशेष**: देश काल की भिन्नता के बाद भी एक दूसरे के बीच पदार्थ जो विलक्षणता का भेद होता है है वह उस द्रव्य में एक विशेष की उपस्थिति से होता है। उस पहचान या विलक्षण प्रतीति का एक निमित्त होता है; यथा- शर्करा में मिठास से।
6. **समभाव**: जहाँ गुण व गुणी का संबंध इतना घना है कि उन्हेंअलग नहीं किया जा सकता।
7. **अभाव**: इसे भी पदार्थ माना गया है। किसी भी वस्तु की उत्पत्ति से पूर्व उसका अभाव अथवा किसी एक वस्तु में दूसरी वस्तु के गुणों का अभाव (ये घट नहीं, पट है) आदि इसके उदाहरण है।

न्याय दर्शन

- **प्रवर्तक**- महर्षि अक्षपाद गौतम
- इस ग्रन्थ में 5 अध्याय है तथा प्रत्येक अध्याय में 2-2 आह्निक हैं। कुल सूत्रों की संख्या 539 हैं।
- न्याय दर्शन एक आस्तिक दर्शन है जिसमें ईश्वर कर्म-फल प्रदाता है।
- इस दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय प्रमाण है।
- न्याय शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होता है परन्तु दार्शनिक साहित्य में न्याय वह साधन है जिसकी सहायता से किसी प्रतिपाद्य विषय की सिद्ध या किसी सिद्धान्त का निराकरण होता है-
  नीयते प्राप्यते विविक्षितार्थ सिद्धिरनेन इति न्याय:।।
  अर्थात न्यायदर्शन में अन्वेषण अर्थात् जाँच-पड़ताल के उपायों का वर्णन किया गया है।
- इसके अनुसार सत्य की खोज के लिए सोलह तत्व है। उन तत्वों के द्वारा किसी भी पदार्थ की सत्यता (वास्तविकता) का पता किया जा सकताहै। ये सोलह तत्व है-प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रहस्थान
- इस दर्शन शास्त्र को तर्क करने का व्याकरण कह जाता है।
- वेद का अर्थ जानने में तर्क का विशेष महत्व है। अत: यह दर्शन शास्त्र वेदार्थ करने में सहायक है।दर्शन शास्त्र में कहा है- **तत्त्वज्ञानान्नि: श्रेयसाधिगम:।।** अर्थात्- इन सोलह तत्वों के ज्ञान से निश्रेयस्की प्राप्ति होती है। (सत्य की खोज में सफलता प्राप्ति होती है)।
- न्याय दर्शन के चार विभाग-
  1. सामान्य ज्ञान की समस्या का निराकरण
  2. जगत की समस्या का निराकरण
  3. जीवात्मा की मुक्ति
  4. परमात्मा का ज्ञान
- न्याय दर्शन में आध्यात्मवाद की अपेक्षा तर्क एवं ज्ञान का आधिक्य है क्योंकि इसका मत है की स्पष्ट विचार एवं तर्क-संगत प्रमाण परमानन्द की प्राप्ति के लिए आवश्यक है।
- किसी विषय में यथार्थ ज्ञान पर पहुंचने और अपने या दूसरे के अयथार्थ ज्ञान की त्रुटि ज्ञात करना ही इस दर्शन का मुख्य उद्देश्य है। दु:ख का अत्यन्तिक नाश ही मोक्ष है।
- न्याय दर्शन की अन्तिम दीक्षा यही है कि केवल ईश्वरीयता ही वांछित है, ज्ञातव्य है और प्राप्य है- यह संसार नहीं।
- पदार्थ और मोक्ष मुक्ति के लिए इन समस्याओं का समाधान आवश्यक है जो 16 पदार्थों के तत्वज्ञान से होता है। इनमें प्रमाण और प्रमेय भी है।
- तत्वज्ञान से मिथ्या-ज्ञान का नाश होता है। राग-द्वेष को सर्वथा नष्ट करके यही मोक्ष दिलाता है।
- इनमें से **प्रमेय** के तत्व-ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है और **प्रमाण** आदि पदार्थ उस ज्ञान के साधन है।
- सुख-दु:ख का परिणाम फल है और अत्यान्तिक रूप से उससे छूटना ही मोक्ष है।

योग दर्शन

- प्रवर्तक- महर्षि पतंजलि
- इस दर्शन के है। यह दर्शन 4 पदों में विभक्त है जिनके सम्पूर्ण सूत्र संख्या 194 है।
- 4 पाद है: समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद और कैवल्यपाद।
- योग दर्शन के अनुसार योग की अवधारणा-
  अथ योगानुशासनम् ।। अर्थात योग की शिक्षा देना इस समस्त शास्त्र का प्रतिपाद्य विषय समझना चाहिए।
- **योगश्चित्तवृत्ति निरोध: ।।** अर्थात् चित्त या मन की स्मरणात्मक शक्ति की वृत्तियों को सब बुराई से दूर कर, शुभ गुणों में स्थिर करके,परमेश्वर के समीप अनुभव करते हुए मोक्ष प्राप्त करने के प्रयास को योग कहा जाता है।
- **योग जीवात्मा का सत्य के साथ संयोग अर्थात् सत्य-प्राप्ति का उपाय है ।**
- **इसके अनुसार** ज्ञान की प्राप्ति मनुष्य-जीवन का लक्ष्य है और ज्ञान बुध्दि की श्रेष्ठता से प्राप्त होता है। इसे प्राप्त करने का उपाय योगदर्शन में बताया है। आत्मा पर नियंत्रण बुध्दि द्वारा, यह योग दर्शन का विषय है।
- योग की प्रक्रिया विश्व के बहुत से देशों में प्रचलित है। अधिकांशत: यह आसनों के रूप में जानी जाती है। कहीं-कहीं प्राणायाम भी प्रचलित है। यह आसन इत्यादि योग दर्शन का बहुत ही छोटा भाग है।
- इस दर्शन की व्यवहारिक और आध्यात्मिक उपयोगिता सर्वमान्य है क्योकि योग के आसन एवं प्राणायाम का मनुष्य के शरीर एवं उसके प्राणों को बलवान एवं स्वस्थ्य बनाने में सक्षम योगदान रहा है।
- **अष्टांग योग**: दुखों से मुक्ति पाने व चित्त को समहित करने के लिए योग के 8 अंगों का अभ्यास आवश्यक है:

1. यम
2. नियम
3. शासन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि

- मुख्यत: योग-क्रियाओं का लक्ष्य है बुद्धि को विकास देना। यह कहा है कि बुध्दि के विकास का अन्तिम रूप है- **ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा।।**
- **ऋतंभरा तत्र प्रज्ञा।।** का अभिप्राय है कि जो ज्ञान सामान्य बुध्दि से प्राप्त होता है वह भिन्न है और ऋतंभरा (योग से सिद्ध हुई बुध्दि) से प्राप्त ज्ञान भिन्न अर्थ वाला हो जाता है। जिससे अध्यात्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

स्मृतियाँ

- स्मृतियाँ हिंदू धर्म के कानूनी ग्रंथ हैं। ये अधिकांशत: पद्य में लिखी गई हैं
- स्मृतियों की रचना वेदों की रचना के बाद लगभग 500 ईसा पूर्व हुआ।
- स्मृति " शब्द का प्रयोग विशेष रूप से सामाजिक व्यवहार और कानून से संबंधित कार्यों के संदर्भ में किया जाने लगा, जैसे कि प्रसिद्ध मनु- स्मृति (मनु के कानून)।
- स्मृति साहित्य एक ऐसे समाज का चित्र उपस्थित करते हैं जहाँ विभाजन का आधार जन्म हो गया तथा समाज में जटिलता आ गई।
- हालाकि स्मृति वैदिक साहित्य वैदिक दर्शन का विकास, व्याख्या और संहिताबद्ध करता है, लेकिन इसे वैदिक श्रुति साहित्य की तुलना में कम आधिकारिक माना जाता है
- कुछ प्रमुख वैदिक स्मृतियों की सूची

प्रमुख स्मृतियाँ	**रचना काल**
मनुस्मृति	200 ई. पू. से 200 ई.
याज्ञवल्क्य स्मृति	100 ई. पू. से 300 ई.
नारद स्मृति	300 ई. पू. से 400 ई.
पाराशर स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
बृहस्पति स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
कात्यायन स्मृति	400 ई. पू. से 600 ई.
देवल स्मृति	पूर्व मध्यकालीन

श्रुति और स्मृति में अंतर

- लिखने से पहले, वेद मौखिक रूप में मौजूद थे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारित होते थे।
- हिंदू धर्म को समझने के लिए इस पवित्र साहित्य को श्रुति और स्मृति नामक दो श्रेणियों में बांटा गया है।
- श्रुति का अर्थ है 'जो सुना गया है' जबकि स्मृति का अर्थ है 'जो याद रखा गया है'
- श्रुति में पवित्र पाठ दैवीय मूल का है और कहा जाता है कि वह लेखकहीन है जबकि स्मृति ग्रंथ मानव बुद्धि के व्युत्पन्न कार्य या उत्पाद हैं और एक लेखक के लिए जिम्मेदार हैं।
- स्मृति ग्रंथ श्रुति से प्रेरित हैं लेकिन इन्हें श्रुति की तुलना में कम महत्व दिया गया है। श्रुति ग्रन्थ शाश्वत एवं निर्विवाद सत्य माने जाते हैं।

ये हिंदू धर्म में पवित्र ग्रंथों के दो मूल रूप हैं।

श्रुति

- श्रुति वैदिक साहित्य का एक शब्द है जो संस्कृत भाषा में है।
- संस्कृत में 'श्रुति' शब्द का अर्थ है 'जो सुना जाता है'।
- श्रुति के ग्रंथों को पवित्र ग्रंथ भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसे स्वयं ईश्वर ने प्रकट किया है। इस प्रकार, वे निर्विवाद और आधिकारिक हैं।
- श्रुति में चार वेद शामिल हैं जो हिंदू धर्म के विभिन्न पहलुओं से संबंधित हैं। वेद काव्यात्मक ऋचाओं के रूप में हैं। चार वेद हैं
  - **ऋग्वेद-** ऋग्वेद श्रुति साहित्य के सबसे पुराने मौजूदा और सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है। ऋग्वेद ऋचाओं का एक विशाल संग्रह है। भजन भगवान की स्तुति में हैं। इसमें कुल 1028 स्तोत्र हैं। भजनों को दस पुस्तकों में व्यवस्थित किया गया है जिन्हें मंडल कहा जाता है।
  - **यजुर्वेद-** यजुर्वेद पवित्र सूत्रों का संग्रह है जिन्हें मंत्र कहा जाता है। यह पुजारियों के लिए अनुष्ठान करने के लिए एक मार्गदर्शिका है। यह दो वेदों काले और सफेद यजुर्वेद से मिलकर बना है। काले यजुर्वेद में अव्यवस्थित छंद हैं जबकि सफेद यजुर्वेद में सुव्यवस्थित और स्पष्ट छंद हैं।
  - **सामवेद-** संस्कृत में सामवेद का अर्थ है, साम जिसका अर्थ है गीत और वेद का अर्थ है ज्ञान। "साम वेद" मूलतः मंत्रों और गीतों की एक पुस्तक है। सामवेद में 1875 छंद हैं। ये गीत औपचारिक बलिदानों और पूजा के विभिन्न अनुष्ठानों के दौरान गाए जाते हैं।
  - **अथर्ववेद-** अथर्ववेद चौथा वेद संग्रह है। इसमें विभिन्न मंत्र, आकर्षण और काल्पनिक भजन शामिल हैं। यह तीनों वेदों से भिन्न है। यह वैदिक जीवन का एक अच्छा चित्र प्रस्तुत करता है।

  उपरोक्त चार वेदों में निहित पवित्र ग्रंथों को तीन उपसमूहों में वर्गीकृत किया गया है।
  - **अरण्यक-** अरण्यक चारों वेदों में निहित दर्शन हैं। यह अनुष्ठानों, बलिदानों या संस्कारों को कोई महत्व नहीं देता है। यह मुख्य रूप से नैतिक विज्ञान और दर्शन पर केंद्रित है। अरण्यक जंगल में वहां रहने वाले छात्रों के लिए लिखे गए थे।
  - **ब्राह्मण** - यह वेदों के मंत्रों की व्याख्या करता है। प्रत्येक वेद का एक ब्राह्मण होता है। ब्राह्मण ग्रंथों में वैदिक पाठ से संबंधित कुछ कहानियाँ भी हैं।

- **उपनिषद-** उपनिषद चारों वेदों में समाहित दर्शन हैं। यह ज्ञान गुरुओं द्वारा अपने चयनित शिष्यों को दिया जाता है।

स्मृति

- स्मृति वैदिक साहित्य का दूसरा भाग है और श्रुति से लिया गया है।
- संस्कृत में इस शब्द का अर्थ है 'जो याद किया जाता है'।
- यह श्रुति की तुलना में थोड़ा कम आधिकारिक है।
- स्मृति के पवित्र ग्रंथ परंपरागत रूप से प्राचीन ऋषियों और ऋषियों द्वारा लिखे गए हैं।
- स्मृति ग्रंथों को कालानुक्रमिक अनुभवों या परंपरा के माध्यम से संशोधित किया जाता है।
- ग्रंथों के आधार पर स्मृति को मोटे तौर पर चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है
  - **वेदांग-** वेदांग हिंदू धर्म के अनुशासन हैं। छह अनुशासन हैं जो वेदों के पाठों के अर्थ को पूरी तरह से समझते हैं। छह विद्याओं के नाम हैं शिक्षा, छंद, व्याकरण, निरुक्त, कल्प और ज्योतिष।
  - **उपवेद** - उपवेद का अर्थ है ज्ञान का उपयोग पारंपरिक या तकनीकी साहित्य में किया जाता है। यह कला और विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों पर लागू होता है। उपवेद मुख्यतः चार हैं। वे हैं धनुर्वेद, आयुर्वेद, अर्थशास्त्र और स्थापत्यवेद।
  - **उपंगस-** उपंगस जीवन का ज्ञान प्राप्त करने का निर्देश है। इसकी शुरुआत बहुत ही बुनियादी सिद्धांतों या अवधारणाओं से होती है। चार उपांग हैं। पहला उपांग न्याय है, दूसरा मीमांसा है, तीसरा इतिहास - पुराण है और अंतिम धर्म शास्त्र है।
  - **दर्शन-** संस्कृत में दर्शन का अर्थ है 'दृष्टि'। इसे सच्चाई की खिड़की माना जाता है। कुल छह दर्शन हैं। वे हैं न्याय , वैशेषिक , सांख्य , पूर्व - इमांसा और बादरायण द्वारा वेदान्त ।

ऋत, सभा और समिति

- ऋग्वैदिक काल में समाज कबीले के रूप में संगठित था, कबीले को **जन** भी कहा जाता था।
- कबीले या जन का प्रशासन कबीले का मुखिया करता था, जिसे 'राजन' कहा जाता था।
- इस समय तक राजा का पद आनुवंशिक हो चुका था। एल्किन राजा अभी भू-स्वामी के रूप में पदस्थ नही हो पाया था जो की उत्तरवैदिक काल की विशेषता है
- राजा को **जनस्थ गोपा** तथा **पुरचेत्ता** कहा जाता था। इसके अतिरिक्त राजा की अनेक उपधियाँ थी - विशपति, गणपति, ग्रामणी आदि।
- कबीले के लोग स्वेच्छा से राजा का कर देते थें। इसे **वलि** कहा जाता था।
- **भागदुध**-विशिष्ट अधिकारी, जो राजा के अनुयायियों के मध्य बलि (भेंट) का समुचित बंटवारा एवं कर का निर्धारण करता था।
- 'राष्ट्र' की क्षेत्रीय अवधारणा धीरे-धीरे विकसित हो रही थीं क्योंकि ऋग्वेद के **10 वें मण्डल में राजा से 'राष्ट्र' की रक्षा** करने का कहा गया है।
- ऋग्वेद में **'जन'** शब्द का उल्लेख **275 बार** मिलता है जबकि जनपद शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं मिलता है।
- राजा कोई भी निर्णय कबिलायी संगठनों के सलाह से लेता था।
- राजा की सहायता हेतु पुरोहित, सेनानी, एवं ग्रामणी नामक प्रमुख अधिकारी थी।
- प्रायः पुरोहित का पद वंशानुगत होता था।
- लड़ाकू दल के प्रधान **ग्रामणी** कहलाते थे।
- सैन्य संचालन **वारत, गण, ग्राम व सर्ध** नामक कबीलाई टुकडिया करती थीं ऋग्वेद में युद्ध प्रायः धनुष-वाणों से होता था।
- ऋग्वेद में **पुरपथरिष्णु** का उल्लेख हुआ है,जो प्रायः दुर्गो को गिराने के लिए एक यन्त्र था।
- सूत, रथकार तथा कम्मादि आदि पदाधिकारी **'रत्नी'** कहे जाते थे। इनकी संख्या राजा सहित क़रीब 12 होती थी। ये राजा के राज्याभिषेक के समय उपस्थित रहते थे।
- **'पुरप'** दुर्गपति होते थे। **'स्पश'** जनता की गतिविधियों को देखने वाले गुप्तचर होते थे।
- **दूत** समय समय पर सन्धि-विग्रह के प्रस्तावों को लेकर राजा के पास जाता था।
- **वाजपति** गोचर भूमि का अधिकारी था
- **कुलप** परिवार का मुखिया होता था
- ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ भी सभा और विद्थ में भाग लेती थी। इस प्रकार, सभा, समिति, विद्थ और परिषद् वैदिक राजतंत्र में सहायक के रूप में काम करती थी।
- ऋग्वैदिक काल कुछ कबीलाई संस्थाएं अस्तित्व में थी, **जैसे- सभा, समित, विदथ तथा गण।**
- अथर्ववेद के अनुसार सभा और समिति प्रजापति की दो पुत्रियाँ थी।

सभा

- **अध्यक्ष**- सभापति
- सभा की उत्पत्ति ऋग्वेद के उत्तरकाल में हुई थी।
- ऋग्वेद में 8 बार सभा की चर्चा की गई है।
- यह वुद्ध (श्रेष्ठ) एवं अभिजात (संभ्रान्त) लोगों की संस्था थीं।जो समिति की अपेक्षा छोटी थी।
- सभा में भागीदारी करने वालों का **सभेय** कहा जाता था।
- अथर्ववेद में सभा एक स्थान पर **'नरिष्टा'** कहा गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ अनुलंधनीय है। इससे ज्ञात होता है कि सभा द्वारा लिया गया निर्णय अनुलंघनीय होता था।
- वेदों में इसके सदस्यों को **पितरः** (पिता) कह कर सम्बोधित कहा गया है ।
- सभा का प्रमुख कार्य न्याय प्रदान करना था।

समिति

- **अध्यक्ष-** कोपति या ईशान
- ऋग्वेद में 9 बार समिति की चर्चा हुई है।
- यह एक आम जनप्रतिनिधि सभा (केन्द्रीय राजनीतिक) थी।
- समिति राजा का निर्वाचन करती थी तथा उस पर नियन्त्रण रखती थी।
- समिति में राजकीय विषयों पर चर्चा होती थी तथा सहमति से निर्णय होता था।
- **आरुणिपुत्र श्वेतकेतु** पंचाल देशीय लोगों की समिति में आया था। उससे जीवन पुत्र प्रवाहण जैबलि ने पांच प्रश्न पूछा था जिसका उत्तर वह नहीं दे पाया था।
- संभवतः समिति में राजनीतिक गैर-राजनीतिक विषयों पर भी चर्चा होती थी यह **राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र** का भी काम करती थी।

विदथ

- ऋग्वेद में विद्थ का उल्लेख 22 बार हुआ है।
- यह आर्यो की सर्वप्राचीन संस्था थी।
- इसे जनसभा भी कहा जाता था।
- रॉथ के अनुसार 'विदथ' संस्था सैनिक असैनिक तथा धार्मिक कार्यो से संम्बद्ध थी।
- के.पी. जायसवाल विद्थ को एक मौलिक बड़ी सभा मानते हैं।
- रामशरण शर्मा इसे आर्यो की प्राचीनतम संस्था मानते हैं,

ऋत

- ऋत 'सत्य का नियम' है। अत: वेदों में ऋत के माध्यम से सत्य की प्राप्ति स्वीकृत की गई है।
- ऋत को वेद में सत्य से पृथक् माना गया है।
- **ऋत का अर्थ** - आचरण संबंधी नियम
- **वरुण**, जो पहले भौतिक नियमों के रक्षक कहे जाते थे, बाद में 'ऋत के रक्षक' (**ऋतस्य गोपा**) के रूप में ऋग्वेद में उल्लिखित हैं।
- ऋत तत्व वेदों की दार्शनिक भावना का मूल रूप है। वस्तुत: परवर्ती साहित्य में ऋत का स्थान धर्म ने ले लिया।
- वैदिक साहित्य में ऋत शब्द का प्रयोग सृष्टि के सर्वमान्य नियम के लिए हुआ है।
- सामन्यतः संसार के सभी पदार्थ परिवर्तनशील हैं किंतु परिवर्तन का नियम अपरिवर्तनीय नियम के कारण सूर्य चंद्र गतिशील हैं।
- वेदों के अनुसार संसार में जो कुछ भी है वह सब ऋत के नियम से बँधा हुआ है। अतः ऋत को सबका मूल कारण माना गया है।
- ऋग्वेद में वरुण को ऋत से उद्भूत माना है। विष्णु को 'ऋत का गर्भ' माना गया है। द्यौ (आकाश) और पृथ्वी ऋत पर स्थित हैं।
- उषा और सूर्य को ऋत का पालन करने वाला कहा गया है।
- ऋत के नियम का उल्लंघन करना असंभव है।

वैदिक कालीन गणतंत्र

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, उत्तरी भारत में बड़ी संख्या में राज्य थे और इनमें से कुछ का राजाओं द्वारा नहीं बल्कि गण या संघ द्वारा शासन होता था जिनका छोटे गणराज्यों या कुलीनतंत्रों के रूप मे गठन हुआ।
- वह बुद्ध का युग था इसलिए इस काल के गणतांत्रिक राज्यों को 'बुद्ध के युग के गणतंत्र' कहा गया है।

वैदिक काल में कई गणराज्यों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं जो इस प्रकार हैं-

1. कपिलवस्तु के शाक्य -

- **राजधानी**-कपिलवस्तु
- **क्षेत्र**- नेपाल की तराई में
- **अवस्थित**- शाक्य गणराज्य के उत्तर में हिमालय पर्वत, पूर्व में रोहिणी नदी तथा दक्षिण और पश्चिम में राप्ती नदी स्थित थी ।
- कपिलवस्तु की पहचान नेपाल में स्थित आधुनिक तिलौराकोट से की जाती है।
- कपिलवस्तु के अतिरिक्त इस गणराज्य में अन्य अनेक नगर थे-चातुमा, सामगाम, खोमदुस्स, सिलावती, नगरक, देवदह, सक्कर आदि।
- शाक्य गणराज्य में लगभग 80 हजार परिवार थे।
- शाक्य लोग अपने रक्त पर बड़ा अभिमान करते थे और इसी कारण वे अपनी जाति के बाहर वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं करते थे।
- गौतम बुद्ध का जन्म इसी गणराज्य में हुआ था।
- बुद्ध से सम्बन्धित होने के कारण इस गणराज्य का महत्व काफी बढ़ गया।
- राजनैतिक शक्ति के रूप में शाक्य गणराज्य का कोई महत्व नहीं था और यह कोशल राज्य की अधीनता स्वीकार करता था।

2. सुमसुमार पर्वत के भग्ग -

- **स्थित**- मिर्जापुर जिले में
- भग्ग गणराज्य के अधिकार-क्षेत्र में विन्ध्य क्षेत्र की यमुना तथा सोन नदियों के बीच का प्रदेश सम्मिलित था।
- भग्ग ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लिखित 'भर्ग' वंश से सम्बन्धित थे।
- भग्ग लोग वत्सों की अधीनता स्वीकार करते थे।
- ज्ञात होता है कि सुमसुमार पर्वत पर वत्सराज उदयन का पुत्र बोधि निवास करता था।

3. अलकप्प के बुलि -

- स्थान-आधुनिक बिहार प्रान्त के शाहाबाद आरा और मुजफ्फरपुर जिलों के बीच में
- स्बुलियों का वेठद्वीप (वेतिया) के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। यही संभवतः उनकी राजधानी थी।
- बुलि लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

4. केसपुत्त के कालाम-

- यह गणराज्य कोशल के पश्चिम में स्थित था।
- वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है कि कालामों का सम्बन्ध पञ्चाल जनपद के 'केशियो' के साथ था।
- कालाम लोग कोशल की अधीनता स्वीकार करते थे।

5. रामगाम (रामग्राम) के कोलिय-

- **राजधानी**- रामग्राम
- यह शाक्य गणराज्य के पूर्व में स्थित था।
- दक्षिण में यह गणराज्य सरयू नदी तक विस्तृत था ।
- शाक्य और कोलिय राज्यों के बीच रोहिणी नदी बहती थी। दोनों राज्यों के लोग सिंचाई के लिए इसी नदी के जल पर निर्भर करते थे। नदी के जल के लिए उनमें प्रायः संघर्ष भी हो जाता था। एक बार गौतम बुद्ध ने ही इसी प्रकार के एक संघर्ष को शान्त किया था।
- कोलिय गण के लोग अपनी पुलिस शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।
- कोलियों की राजधानी रामग्राम की पहचान वर्तमान गोरखपुर जिले मे स्थित रामगढ़ ताल से की गयी है।

6. कुशीनारा के मल्ल -

- कुशीनारा की पहचान देवरिया जिले में स्थित वर्तमान कसया नामक स्थान से की जाती है।
- बाल्मीकि रामायण में मल्लों को लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु मल्ल का वंशज कहा गया है।

7. पावा के मल्ल -

- पावा आधुनिक देवरिया जिले में स्थित पडरौना नाम स्थान था।
- मल्ल लोग सैनिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे।
- जैन साहित्य से पता चलता है कि मगध नरेश अजातशत्रु के भय से मल्लों ने लिच्छवियों के साथ मिलकर एक संघ बनाया था।
- अजातशत्रु ने लिच्छवियों को पराजित करने के बाद मल्लों को भी जीत लिया था।

8. पिप्पलिवन के मोरिय -

- मोरिय गणराज्य के लोग शाक्यों की ही एक शाखा थे।
- महावंश टीका से पता चलता है कि कोशल नरेश विडूडभ के अत्याचारों से बचने के लिए वे हिमालय प्रदेश में भाग गये जहाँ उन्होंने मोरों को कूक से गुंजायमान स्थान में पिप्पलिवन नामक नगर बसा लिया।
- मोरों के प्रदेश का निवासी होने के कारण ही वे 'मोरिय' कहे गये। 'मोरिय' शब्द से ही 'मौर्य' शब्द बना है। चन्द्रगुप्त मौर्य इसी परिवार में उत्पन्न हुआ था।
- पिप्पलिवन की पहचान गोरखपुर जिले में कुसुम्हों के पास स्थित 'राजधानी' नामक ग्राम से किया जाता है।

9. वैशाली के लिच्छवि-

- **राजधानी**-वैशाली
- यह बुद्ध काल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था। लिच्छवि वज्जिसंघ में सर्वप्रमुख थे।
- वैशाली, मुजफ्फरपुर जिले के बसाढ़ नामक स्थान में स्थित है।
- महावग्ग जातक में वैशाली को 'एक धनी, समृद्धशाली तथा घनी आबादी वाला नगर' कहा गया है।
- यहाँ अनेक सुन्दर भवन, चैत्य तथा विहार थे।
- लिच्छवियों ने महात्मा बुद्ध के निवास के लिए महावन में प्रसिद्ध **कूट्टागारशाला** का निर्माण करवाया था जहाँ रहकर बुद्ध ने अपने उपदेश दिये थे।
- लिच्छवि लोग अत्यन्त स्वाभिमानी तथा स्वतन्त्रता- प्रेमी हुआ करते थे। तथा उनकी शासन व्यवस्था संगठित थी।
- बुद्ध काल में यह राज्य अपनी समृद्धि की पराकाष्ठा पर था।
- यहाँ का राजा चेटक था। उसकी कन्या छलना का विवाह मगधनरेश बिम्बिसार के साथ हुआ था।
- महावीर जैन की माता त्रिशला लिच्छवि राजा चेटक की बहन थीं ।

10.मिथिला के विदेह -

- **राजधानी**-मिथिला
- बिहार के भागलपुर तथ दरभंगा जिला मे विदेह गणराज्य स्थित था। जो प्रारम्भ में यह राजतन्त्र था।
- यहाँ के राजा जनक अपनी शक्ति एवं दार्शनिक ज्ञान के लिए विख्यात थे। परन्तु बुद्ध के समय में यह संघ राज्य बन गया।
- विदेह लोग भी वज्जि संघ के सदस्य थे। उनकी राजधानी मिथिला की पहचान वर्तमान जनकपुर से की जाती है ।
- बुद्ध के समय मिथिला एक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था ।

गणराज्यों की शासन पद्धति -

- गणराज्यो की शासन पद्धति के विषय में इतना स्पष्ट है कि गण की कार्यपालिका का अध्यक्ष एक निर्वाचित पदाधिकारी होता था जिसे राजा कहा जाता था ।
- सामान्य प्रशासन की देख-भाल के साथ-साथ गणराज्य में आन्तरिक शान्ति एवं सामंजस्य बनाये रखना उसका एक प्रमुख कार्य था।
- अन्य पदाधिकारियों में उपराजा (उपाध्यक्ष), सेनापति, भाण्डागारिक (कोषाध्यक्ष) आदि प्रमुख थे।
- राज्य की वास्तविक शक्ति एक केन्द्रीय समिति अथवा संस्थागार में निहित होती थी। जिसकी सदस्य संख्या काफी बड़ी होती थी।

निष्कर्ष -

छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बुद्ध- काल के गणराज्य अत्यन्त शक्तिशाली एवं सुव्यवस्थित थे। उन्होंने अपने सम- कालीन राजतन्त्रों का बड़ा प्रतिरोध किया था। इन गणराज्यो में देश-भक्ति तथा स्वाधीनता की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। किन्तु वे राजतन्त्रों के विरुद्ध अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं कर सके तथा अन्त में उनका पतन हो गया ।

वर्णाश्रम व्यवस्था

- ऋग्वैदिक काल के प्रारंभ में वर्ण व्यवस्था विद्यमान नहीं थी
- युग में समाज में केवल दो वर्ग के थे पहला आर्य और दूसरा अनार्य
- यह दोनों वर्ग एक दूसरे से विपरीत थे तथा इन दोनों के बीच बहुत अंतर था।
- कुछ समय पश्चात **व्यवसाय और कार्य प्रगति के आधार** पर वर्ण विभाजन हुआ फलस्वरूप ब्राह्मण , क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र नामक चार वर्गों का उदय हुआ।
- पहला वर्ग मंत्र रचना मंत्र पाठ या गीत कार्य तथा पौरोहित्य से संबंधित था इस वर्ग को ब्राह्मण कहा गया
- दूसरा वर्ग युद्ध विद्या में निपुण युद्धों में भाग लेने वालों समाज और राष्ट्र की रक्षा करने वालों से संबंध था यह वर्ग क्षत्रिय कहलाया
- तीसरा वर्ग कृषि वाणिज्य व्यापार तथा व्यवसाय से संबंधित था यह वर्ग वैश्य कहलाया
- युद्ध में पराजित अनार्य दास या दस्यु कहलाए जिन्हें समाज की सेवा के लिए नियोजित किया गया यह वर्ग शूद्र कहलाया।

पुरुष -सूक्त में वर्णित वर्ण व्यवस्था

- ऋग्वेद के प्रथम 9 मंडलों मे इन चार वर्गों का उल्लेख नहीं हुआ।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में इन चारों वर्गों का उल्लेख मिलता है
- पुरुष सूक्त में चारों वर्णों की उत्पत्ति ब्रह्म पुरुष की विभिन्न अंगों से निधारित की गई
- पुरुष सूक्त के अनुसार विराट पुरुष के मुख में से ब्राह्मण उसकी भुजाओं से क्षत्रिय है जांघों से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए
- इन वर्गों का शरीर के विभिन्न अंगों से तुलनात्मक संबंध तथा जिस कर्म से उनका नियोजन किया गया है यह तत्कालीन समाज में उनकी क्रमानुसार स्थिति का परिचायक है।

1. **ब्राह्मण**
   - ऋग्वेद में ब्राह्मण शब्द का प्रयोग अनेक बार किया गया है जो एक वर्ग अथवा समूह की और भी संकेत करता है
   - यज्ञ मंत्र प्रार्थना अधिकारियों में संलग्न वर्ग के ब्राह्मण के अंतर्गत स्वीकार किया गया
   - इसे सोमपान करने तथा वार्षिक यज्ञ में मंत्र पाठ करने वाला माना गया
2. **क्षत्रिय**
   - क्षत्रिय शब्द का प्रयोग भी ऋग्वेद में युद्ध में भाग लेने वाले युद्ध विद्या में निपुण राष्ट्र की रक्षा करने वाले लोगों के लिए किया गया
   - राज्य शब्द क्षत्रो के लिए प्रयुक्त किया जाता था
   - क्षत्रिय वर्ग युद्ध प्रशासन और शौर्य से संबंधित था
3. **वैश्य**
   - इस शब्द का प्रयोग ऋग्वेद की केवल पुरुष सूक्त में मिलता है
   - यह वर्ग कृषि वाणिज्य व्यापार तथा व्यवसाय में संलग्न था
   - ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्षों की तुलना में इस वर्ग का कोई विशेष महत्व नहीं था।
4. **शूद्र**
   - प्रथमतः शूद्र शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में मिलता है
   - पराजित अनार्य शुद्र वर्ग के रूप में स्वीकार किए गए
   - संभवतः यह वर्ग पारिवारिक सेवकों और परिचारिका का प्रतिनिधित्व करता था
   - इनका स्तर निम्न था फिर भी यह वर्ग तत्कालीन जीवन में अपना महत्व रखता था

वर्ण व्यवस्था का प्राथमिक स्वरूप

- ऋग्वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था का प्रारंभिक स्वरूप सरल और लचीला था
- इस युग में वर्ण व्यवस्था कर्म विभाजन पर आधारित थी ना कि जन्म के आधार पर अतः आवश्यकतानुसार लोग अपना व्यवसाय भी बदल सकते थे
- वर्णों में आपसी खानपान तथा वैवाहिक संबंधों पर भी किसी प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं था
- एक ही परिवार के सदस्य अलग-अलग व्यवसाय कर सकते थे और किसी वर्ग विशेष की व्यक्ति के लिए दूसरा व्यवसाय करने पर कोई प्रतिबंध नहीं था
- ऋग्वेद में एक ऋषि कहते हैं कि मैं मंत्र निर्माता हूं मेरे पिता और मेरी माता पत्थर की चक्की से अनाज पीसने वाली है इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था कर्म प्रधान थी जन्मजात नहीं।

उत्तर वैदिक युगीन वर्ण व्यवस्था

- उत्तर वैदिक युग में वर्ण व्यवस्था अधिक स्पष्ट और दृढ़ हो गई
- अथर्ववेद में ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र नामक चार वर्गों का उल्लेख है और वर्गों के मध्य अंतर का स्पष्ट उल्लेख मिलता है

1. **ब्राह्मण**
   - उत्तर वैदिक युग मैं ब्राह्मणों का अत्यधिक महत्व था समाज में उनकी स्थिति सर्वश्रेष्ठ हो गई थी इन्हें दिव्य वर्ण बताया गया है
   - इनकी समस्त सुविधाओं का ध्यान रखा जाता था
   - **कार्य** -ब्राह्मण अध्यापन तथा यज्ञ कार्य में संलग्न रहते थे
   - पौरोहित्य संभवत वंशानुगत था
   - वह अपने ज्ञान धार्मिक स्थलों तथा मंत्रों के कारण प्रभावशाली था